पूज्यपाद गुरुदेव शृङ्गी ऋषि कृष्ण दत्त जी महाराज के द्वारा व्याख्यायित ओ३म् के महत्व को संकलित किया गया है, उस ओ३म् के महत्व का पाठन करने से दिव्य संस्कारों की प्रस्थापना होगी।

यह जो ओ३म् रूपी धागा है, यह परमपिता परमात्मा का सर्वोपरि नामोकरण है। वह जो वेद रूपी ऋचा है जिसमें प्रकृति का विज्ञान है, वह ओ३म् रूपी धागे में पिरोया हुआ है। वह परमात्मा से सुसज्जित है। इसी प्रकार जगत की प्रत्येक वस्तु प्रभु में पिरोई हुई है, धर्म में पिरोई हुई है। धर्म नाम प्रभु का है धर्म से कोई वस्तु पृथक नहीं है, वह उसी में पिरोई हुई है और जो उसको दूसरा स्वीकार करता है वह अन्धकार में चला जाता है, वह अज्ञानी कहलाता है।

आज का मानव, आज की माताएं, प्रतिदिन अपनी त्वचा को सजाने का कार्य करती रहती है। परन्तु यह नहीं विचारा, कि यह जो तेरी त्वचा है, यह तो महान पृथ्वी से बनी है, और पृथ्वी में लय हो जाएगी। परन्तु हे माता! तेरी सुन्दरता वह है, जब तेरे कण्ठ में अस्तिकता होगी। तेरे हृदय में उदारता होगी। तेरा मन तेरे वश में होगा। जब तक तेरा मन प्रत्येक स्तरों से सजा हुआ न होगा, तब तक हे माता! तेरी सुन्दरता का कुछ नहीं बनेगा। हे मानव! त्वचा को सजाने से कुछ नहीं बनेगा। अरे, जब तक हमारा मन, हमारा श्वास, प्रश्वास ओ३म् के नाम से बिंधा हुआ ही नहीं, तो बेटा! हमारा त्वचा का क्या सजा हुआ है। और क्या हमारा शरीर सजा हुआ है, हम तो भौतिक तत्त्वों को, पृथ्वी से उत्पन्न होने वाले तत्त्वों को, सुन्दरता माने बैठे हैं। अरे, मानव! यह तेरी सुन्दरता नहीं, तेरा वास्तविक सौन्दर्य तो वह है, जब इन प्राणों की डोरी बनाई जाएगी और ओ३म् के मनके बनाएं जाएंगे। यह मन, उन मनकों से सजा हुआ होगा, और श्वांस प्रश्वास ओ३म् से विन्धा हुआ होगा। यह मन उन मनकों में लय होगा उस समय मानव तुम्हारा कण्ठ, तुम्हारा सौन्दर्य, तुम्हारा तेज, तुम्हारा ब्रह्मचर्य उस मन को प्राप्त होकर के आत्मा को प्राप्त हो जाएगा। और आत्मा परमात्मा को प्राप्त हो जाएगा। यह है मानव का वास्तविक सौन्दर्य।

जैसे ओ३म् रूपी धागा इस प्रकृति के कण कण में, एक सूत्र रूप में पिरोया हुआ है। इसी प्रकार एक मानव दूसरे मानव से पिरोया हुआ है। इसी प्रकार याग में अग्नि पिरोयी हुई है। काष्ठ अग्नि से पिरोया हुआ है, समिधा अग्नि से पिरोयी हुई है और अग्नि उस समिधाओं से साकल्य पिरोया हुआ है और साकल्य सुगन्ध से पिरोया हुआ है और सुगन्ध देवताओं से पिरोई हुई हैं। और देवता जड़ और चैतन्य देवता ज्ञान सरस्वती से पिरोये हुए हैं। वाहन से पिरोये हुए हैं और वाहन विद्युत से पिरोया हुआ है और वह जो विद्युत है वह द्यौ से पिरोयी है और द्यौ उस प्रकृति से पिरोया हुआ है और प्रकृति प्राण से पिरोयी हुई है, और प्राण परमपिता परमात्मा से पिरोया हुआ है एक दूसरा मानव एक दूसरे मानव से और एक परमाणु एक दूसरे परमाणु से पिरोया हुआ है एक दूसरी तरंग एक दूसरी तरंग से पिरोयी हुई मानी जाती है।

मुनिवरों! वह जो मेरा देव परमपिता परमात्मा है वह सूत्र है और मानव का प्रत्येक जो श्वांस है, श्वांस पर श्वांस गति कर रहा है, वह उस सूत्र के मनके हैं। जब मनके पिरो दिए जाते हैं प्रत्येक श्वांस ओ३म् रूपी धागे में पिरो दिया जाता है, सूत्र में पिरोने वाला अपने को धन्य स्वीकार करता है और वह प्रभु की कृति को दृष्टिपात करने लगता है।

तो विचार क्या? बेटा! हमें अपने को पिरोना है जैसे शब्द किसी में पिरोया हुआ है। शब्द की उत्पत्ति हो रही है। शब्द गान रूप में गाया जा रहा है। वेदमन्त्र ध्वनि से गाया जा रहा है। उसका कोई सूत्र है। मुनिवरों! वेद में ओ३म् का उच्चारण किया जाता है हमारे यहाँ, परम्परागतों से सार्वभौम सिद्धान्त माना गया है। जब ओ३म् का जब वेद की ध्वनि का उच्चारण करते रहते हैं उसमें पश्चात में ओ३म् में म् कहते हैं, म् की आभा में मानव रत्त हो जाता है। मुनिवरों! अग्र नाम अ जो है यह ईश्वर का वाची शब्द कहलाता है। हमारे यहाँ उ जीवात्मा का वाची शब्द कहलाता है। म् यहाँ प्रकृति का वाची शब्द कहलाता है। मेरे प्यारे! जब ओ३म् के आङ्गन में मानव गति करता है ओ३म् उच्चारण करके वर्चस्व उच्चारण करता है। अग्नि को चेताने का प्रयास करता है। ओ३म् रूपी धागे में ओ३म् रूपी सूत्र में प्रत्येक वेद की जो ऋचा है वह पिरोई हुई है। वह एक माला के सदृश्य बन जाती है। उस माला को कौन धारण कर रहा है? उस माला को वेद का पठन पाठन करने वाला और उसके पश्चात उसमें विवेक हो, विवेकी ही उसको धारण करता है। अपने में महान बनने का प्रयास करता है और वह कहता है कि मैंने इस माला को धारण किया है जिस माला को धारण करने के पश्चात मुझे और माला की आवश्यकता नहीं है। मुझे स्वर्ण के गहनों की आवश्यकता नहीं है। मेरा कण्ठ उस माला से सजातीय बन गया है। मेरा जो अङ्ग अङ्ग है उस माला में पिरोया हुआ है जैसे वेद का प्रत्येक मन्त्र ओ३म् रूपी धागे में पिरोया हुआ होता है और वह जो ओ३म् रूपी धागा है उसमें वेद की ऋचा में ज्ञान है, विज्ञान है, तरंगवाद है, परमाणुवाद है। मुनिवरों! सर्वत्र जो विवेचना उसके गर्भ में विद्यमान है ऋचा के वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोई हुई है। इसीलिए हमारे आचार्यों ने यह कहा है कि जितना संसार का ज्ञान और विज्ञान है, उसका कोई सूत्र है और वह सूत्र में पिरोया हुआ कोई नृत्य है, कृत्य हो रहा है जिसके

ऊपर मानव परम्परागतों से ही, कहीं साधना के रूप में, कहीं विज्ञान के रूप में, कहीं भक्ति के रूप में, कहीं सेवा के रूप में, कहीं वह शान्त मुद्रा में विद्यमान हो करके उसको निहारता रहता है, उसको आभायित करता रहता है।

तो विचारना यह है कि उसका कोई सूत्र है और वह सूत्र ओ३म् रूपी धागा है। हम विचारने वाले बनें कि अ जो नाम है वे परमपिता परमात्मा का है, उ का जो वाची शब्द है वह जीवात्मा का वाची है और म् जो शब्द है इस म् में ही मानो सर्वत्र विचार, सर्वत्र जगत विद्यमान है और मैं ही मैं पुकारता हुआ मानव अपनी प्रतिभा को नष्ट कर देता है। वह कह रहा है कि यह मेरा पुत्र है मेरे प्यारे! कहता है कि यह मेरा पति है। यह मेरा कुटुम्ब है। देखो, मैं ही मैं में जीवन की प्रतिभा समाप्त हो जाती है मेरे प्यारे! वह म् आभा को लेकर के आता है। उस म् आभा में सर्वत्र जगत विद्यमान है। परन्तु जब वह प्रभु के आङ्गन में जाता है तो मुनिवरों! वह तीनों गुणों वाला कहलाता है। परन्तु जब यह सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण के क्षेत्रों में प्रभु के समीप जाता है यह तीनों गुणों को लेकर के वह मानव यदि संसार में आया है तो इन तीनों गुणों के बिना भी मानव का जीवन नहीं चलता। यह तीनों गुण होने चाहिए।

रात्रि के समय जब निद्रा की गोद में जाओ तो श्वांस के साथ में ओ३म् रूपी धागे में श्वांस को पिरो करके और वैदिक ध्वनि को उच्चारण करके निद्रित हो जाओ। तुम्हें सुखद आनन्द की प्राप्ति होगी।

आओ, मेरे पुत्रो! मैं कहाँ चला गया हूँ? विचार विनिमय क्या? प्रभु का गुणगान गाने वाला, ओ३म् की उपासना, सबसे प्रथम अ शब्द है प्रभु का वाची है, जीवात्मा जो तीनों गुणों वाला है म् में तीनों गुण प्रकृति के आ करके यह म् में जो रत्त हो जाता है इससे मानव को यदि उपराम होगा तो तीनों गुणों को बरतने वाला इस म् से उपराम होता रहेगा और ओ३म् के आङ्गन में गति करता रहेगा। अपने प्रत्येक श्वांस को ओ३म् रूपी धागे में पिरोने वाला बनेगा तो उसका कल्याण होगा।

यह मन नाना प्रकार की तुच्छताओं में निवास करता है और अच्छी भावनाएं भी सोचता हैं। इसीलिए हे भगवन! हम यह विचारते हैं कि मन से अच्छी वार्ता ही करें, जब मन से अच्छी वार्ता विचारते है तब उसमें रजोगुण आने का कोई कारण ही नही बनता, जन्म धारण करते ही जिह्वा पर ओ३म् की रेखा खींची जाती हैं तो उस रेखा में हमें बांध दिया और वह रेखा हमारे समक्ष है।

इस रसना का सम्बन्ध मन से है इसीलिए यदि ओ३म् शान्त हो जायेगा तो हमारा जीवन भी शान्त हो जायेगा। ओ३म् का वेदों में बड़ा महत्व है। हे भगवन! जब नामकरण संस्कार होता हैं तो उस समय माता पिता कहा करते हैं कहां से आये हो? उस समय हम कहते हैं कर्मों का भोग भोगने के लिए आये हैं। बाल्यावस्था में ज्ञान तो नही रहता, परन्तु उच्चारण का कुछ ध्यान तो रहता ही है। उस काल में शब्द ध्वनि बन जाती हैं ध्वनि बन करके हम कर्मों का भोग भोगने के लिए आये हैं ऐसा व्यक्त करते हैं। इसीलिए हे भगवन! आज हम रजोगुणी होकर क्या करेंगें? हमें तो सतोगुणी रह करके संसार में जीवन पूरा करना है भगवन! रजोगुण में रहेंगें तो जीवन अधोगति में चला जायेगा और पार्थिव बनता चला जायेगा यदि हम अग्नि तुल्य सतोगुणी बनेगे तो जीवन ऊपर की और जायेगा और अन्त में सूर्य मण्डल में होते हुए, बृहस्पति लोक में होते हुए मोक्ष तक को प्राप्त हो जायेंगें।

त्वचा को सजाने से कुछ नहीं बनेगा। जब तक हमारा मन, हमारा श्वास प्रश्वास ओ३म् के नाम से बिंधा हुआ नहीं होगा तब तक त्वचा और भौतिक तत्वों से, पृथ्वी से उत्पन्न होने वाले तत्वों से हम सुन्दरता माने बैठे हैं, अरे मानव! यह तेरी सुन्दरता नहीं, तेरा वास्तविक सौन्दर्य तो वह है जब इन प्राणों की डोरी बनाई जायेगी और ओ३म् के मनके बनाये जायेंगे और यह मन उन मनकों से सजा हुआ होगा और श्वास प्रश्वास ओ३म् से बिंधा हुआ होगा। तब यह मन, उन मनकों में लय होगा, उस समय हे मानव! तुम्हारा कण्ठ, तुम्हारा सौन्दर्य, तुम्हारा तेज, तुम्हारा ब्रह्मचर्य, उस मन को प्राप्त होकर के आत्मा को प्राप्त हो जायेगा और आत्मा परमात्मा को प्राप्त हो जायेगा। यह है मानव का वास्तविक सौन्दर्य।

हमे ओ३म् के बहुत ऊँचे शिखर पर जाना है। वेद का प्रत्येक मन्त्र उस ओ३म् से बन्धा हुआ है। जिस प्रकार यह परमात्मा की अनन्त सृष्टि है और प्रकृति के कण कण में उस चेतन प्रभु का महान प्रकाश, प्रकाशित हो रहा है। जिससे यह प्रकृति अपना कर्त्तव्य कर रही है, इसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्र का शब्दार्थ उस ओ३म् से बन्धा हुआ है, जिस ओ३म् को हम प्रभु का मुख्य नाम कहा करते हैं।

आज कोई प्रश्न करता है कि ओ३म् नाम ही मुख्य क्यों माना है और अन्य नामों को मुख्य क्यों नहीं माना गया? वास्तव में तो परमात्मा के जितने भी नाम हैं उन सबसे परमात्मा ही प्रकाशित हो रहा है, उसके महान गुणों का वर्णन, कर्त्तव्य का वर्णन है, प्रत्येक पर्यायवाची शब्दों में वह महत्व भरे वाक्य आ जाते हैं। परन्तु ओ३म् को इसलिए हमारे यहाँ मुख्य माना जाता है क्योंकि प्रभु का एक मुख्य नाम ओ३म् है। ऐसा महान नाम है जिसमें महान विचित्रता भरी हुई है और वह प्रत्येक वेद मन्त्र में प्रकाशित

हो रहा है।
आज तू, वास्तव में आत्मा का आदेश चाहता है तो तू रसना के उस आनन्द को त्याग जिसका आदि और अन्त नहीं है। तुझे रसना के वास्तविक आनन्द को लाना है। जिस रसना पर ओ३म् का आनन्द आ गया तो वाणी पवित्र बन गई। यह वाणी आत्मा के द्वारा जायेगी तो तेरा अन्तःकरण पवित्र बन जायेगा। आज तू इस रसना के आनन्द में दूसरे जीवों को भक्षण कर रहा हैं, इस वाणी के द्वारा ओ३म् को क्यों नहीं विचारता। आज तू इस वाणी में ओ३म् को बसा लें। जब ओ३म् तेरी वाणी में स्थान कर जायेगा तो तेरी वाणी व अन्तःकरण पवित्र हो जायेगा। मल, विक्षेप, आवरण शान्त हो जायेंगे। तेरी आत्मा की पुकार तेरे द्वारा आ करके परमात्मा से मिलान करा देगी।
जिस प्रकार वेद का प्रत्येक मन्त्र ओ३म् की ध्वनि से बिंधा हुआ है इसी प्रकार हमारे शरीर में जितना अंग उपांग है ये एक एक वेद मन्त्र से बिंध जाऐंगे, तो उस समय मानव में से सुगन्ध उत्पन्न हो जाएगी।
जैसे यज्ञशाला में सब सामग्री यज्ञमान के द्वारा होती है, घृत भी अधीन होता और अग्नि में उसकी आहुति दे देता है इसी प्रकार जब प्रत्येक इन्द्रिय और मन आदि सब मनुष्य के शासन में रहते है तो यह आत्मा यज्ञमान होकर, इन सबकी सामग्री बना करके ज्ञान रूपी यज्ञशाला में आहुति देने वाला बनता है। संसार में उस आत्मा का प्रभाव इस प्रकार ओत प्रोत हो जाता है जैसे वेद का प्रत्येक मन्त्र ओ३म् की ध्वनि से बिंधा हुआ है।
जितने वेद मन्त्र ओ३म् की व्याहृतियों से बद्ध हैं उन सब का ही नाम गायत्री है क्योंकि हम गायत्री में रमण करते हैं। जितनी भी विद्यायें हैं उन सबका सम्बन्ध वेद से है और वेद का सम्बन्ध ओ३म् से है, एक दूसरे से सम्बन्धित होते हुए विकास हो रहा है।
वेद की जो प्रत्येक ऋचा है, वेद का जो प्रत्येक वाक् है, वह ओ३म् रूपी धागे से पिरोया हुआ है। ओ३म् रूपी धागे से पिरोया हुआ होने के नाते से वह शृङ्खला बद्ध हो रहा है। इसी प्रकार वह जो ब्रह्म की चेतना है, उस ब्रह्म की चेतना में यह जो जितना जगत है, यह मनके के स्वरूप में परिणत हो रहा है।
हम प्रभु का गुणगान गाते चले जायें। यह हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। जब प्यारा बालक माता के गर्भस्थल से पृथक होता है, तो उस समय वह ओ३म् ओ३म् का पाठ करता है उसके मुखारबिन्दु से ओ३म् की ध्वनि उत्पन्न होती है। संसार में किसी भी लोक लोकान्तर से हो, पृथ्वी के किसी भी भाग में कोई भी प्राणी हो, परन्तु जब बालक का जन्म होता है, तो गर्भ से पृथक होते ही व्याकुल होता है। ओ३म् ओ३म् का पाठ करता है। उसके गर्भ में ओ३म् की प्रतिभा होती है। इसीलिए हमें विचार विनिमय करना है कि यह जो ओ३म् शब्द है, यही तो हमें ज्ञान देता है और प्रभु के आँगन में ले जाता है। वास्तव में वाणी के उच्चारण करने का यही स्वभाव है। आज कोई मानव प्रभु को स्वीकार नही करता परन्तु जब भी कोई वाक्य उच्चारण करता है तो ओ३म् का शब्द उसके मुखारबिन्दु से उत्पन्न होता है। नास्तिक भी उसे नष्ट नही कर पाता। क्योंकि ओ३म् जो शब्द है वह वाणी का पर्यायवाची शब्द है। यह मन की प्रतिभा है प्रभु की देन है।
अन्तरात्मा का स्वभाव ऊर्ध्वागति को जाना है। यह जो वेदों का ज्ञान है, वेदों की जितनी ऋचाएं है, वे सब ओ३म् रूपी धागे से पिरोई हुई रहती है। ये जो वेद रूपी ऋचाएं है, ये एक प्रकार के मनके है और ओ३म् रूपी धागे में पिरोएं हुई है। इसीलिए हमारे यहाँ वेद मन्त्र के उच्चारण के प्रारम्भ में आचार्यजन ओ३म् का उच्चारण किया करते है। ओ३म् का उच्चारण क्यों किया करते है? क्योंकि वे वेद की ऋचाएं हैं, जिन ऋचाओं का हमने पठन पाठन किया। स्वरों सहित जिनका उच्चारण किया, उनके प्रारम्भ में ओ३म् का उच्चारण करते हैं क्योंकि वेद मन्त्र में जो ज्ञान और विज्ञान है वह उस ओ३म् रूपी धागे से पिरोया हुआ है। जितना भी ज्ञान विज्ञान है अथवा वह भौतिक विज्ञान है अथवा आध्यात्मिक विज्ञान है। वह ओ३म् रूपी धागे में पिरोया हुआ होता है। ऋषि कहते है कि यह जितना जगत है जितना ब्रह्माण्ड है जितना इसमें प्राणी मात्र है यह सब ओ३म् रूपी धागे से पिरोया हुआ है यह एक प्रकार का जो ब्रह्माण्ड है, यह माला के रूप में परिणत हो रहा है और इसमें ओ३म् रूपी जो धागा है वह पिरोया हुआ है। ओ३म् की तीन मात्राएं है और तीन गुण कहलाएं गये हैं रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण और तीन ही लोक कहलाए गये है। भू भुवः स्वः। इसी प्रकार यह त्रिवाद कहलाया जाता है। तीनों गुणों को अपने में शमन करते हुए ऊर्ध्वा में गमन करके आध्यात्मिकवाद में परिणत हो जाना चाहिए। हे माता! जब तेरे प्रत्येक श्वास के साथ ओ३म् का जप चलता है, तो तेरे गर्भस्थल में जिस बालक का निर्माण होता है वह ऊर्ध्वा गति वाला होता है।
मन और प्राण को एक सूत्र में लाना है, तो उसका सूत्र क्या है? उसका सूत्र है ओ३म् है। ओ३म् के सूत्र में पिरोकर मानव दिव्य शक्ति प्राप्त करता हैं। ओ३म् के सूत्र में पिरोने के लिए ज्ञान ओर विवेक दोनो ही अनिवार्य हैं। महर्षि शाण्डिल्य, महर्षि प्रवाहण,

महर्षि दधीचि, महर्षि श्वेतकेतु, महर्षि दालभ्य और महर्षि भारद्वाज ऋषि कहते है कि वेद का प्राण ओ३म् है और प्रकाश का प्राण भी ओ३म् हैं।

राष्ट्र के रजोगुण, तमोगुण से मिश्रित अशुद्ध भोजन से मन, कर्म, वचन और हृदय एक रस नही हो पाते, तो इन्द्रियों का और प्राणों का ओ३म् के द्वारा मन्थन नही हो सकता ओर जब मन्थन नही होगा तो फेन नही बन सकता और जब फेन नही बनता तो वासना रूपी नमुचि भी नही मरता।

हे वेद के ब्राह्मण! तू जागरूक हो, और जागरूक होकर के तू ओ३म् की पताका को लेकर के, तू वेद के साहित्य के ज्ञान को लेकर के और साहित्य को शुद्ध बना करके, तू अपनी पताका को ऊँचा बना। धर्म को लेकर के चल। जिससे राष्ट्र और समाज में शुद्धता आ जाये और रूढ़िवाद समाप्त होना चाहिये।

हम इस मन और प्राण दोनों को ओ३म् रूपी धागे में पिरोएं। माता के आदेशों का पालन करने वाले बालक ब्रह्मवेत्ता बने। पांच वर्ष की आयु में मन की व्यापकता से, मन के आवेशों से बालक ब्रह्मवेत्ता बन गए। आत्मा के स्वरूप को जानने वाले बन गए, पांच वर्ष की आयु में। हे माँ! तू अपने मन की आभा से अपने ज्ञान के द्वारा अपने पुत्रों को ज्ञान में परिणत करा सकती है। ज्ञान की आभा जब मन के द्वारा आती है, तो यह मन विचित्र बन करके मानव के शरीरों में प्रवाह से कार्य करता है।

हमारे ऋषि मुनियों ने कहा कि प्रत्येक मानव को प्राणायाम करना चाहिये। प्राणायाम की विधि हमारे यहाँ भिन्न भिन्न प्रकार से मानी है। प्रत्येक प्राण ओ३म् रूपी धागे में पिरोया हुआ होना चाहिए और प्राण के साथ में मन होना चाहिए। मन और प्राण दोनों एक सूत्र में हों, और उनमें जो तरंगें हैं, उनमें जो गति है, वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोई हुई होनी चाहिए। जब ओ३म् रूपी सूत्र में प्रत्येक तरंगें और गति पिरो दी जाती है तो उस मानव का जीवन योगमय, ब्रह्मचर्यमय बन जाता है। ब्रह्मचर्य और योग में परिणत होता हुआ, प्राण की प्रत्येक आभा, मन की प्रत्येक आभा, ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोने से मानव प्राणायाम करता है और तो वह प्राण ओ३म् में स्थित हो जाता है। मन भी उसमें स्थित हो जाता है। प्राणायाम के द्वारा उनकी स्थिरता, ओ३म् रूपी धागे में पिरोने का नाम ही हमारे यहाँ योग कहा जाता है। हमें योगी बनना चाहिए। प्रत्येक मानव जब ओ३म् के धागे में, प्रत्येक अपनी श्वास की गति को, अपने प्राणों की गति को, मन की आभा को, इस में पिरो देता है, तो यह वेद रूपी ज्ञान है, अथवा इस में जो विज्ञान है वह उस योगी के समीप एक एक ऋचा आती है और अपना अपना दिग्दर्शन कराती चली जाती है। जैसे चित्र पटल पर नाना प्रकार के चित्र आते रहते हैं। मानव के मन में गति पर गति आती रहती है, चित्र पर चित्र आते रहते हैं। इसी प्रकार मन और प्राण दोनों के एक सूत्र में आने से ओ३म् रूपी धागे में पिरोए हुए होने से वेद की प्रत्येक ऋचा ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोई हुई है। इसीलिये वेद की प्रत्येक आभा प्रत्येक उसका दैहिक, बौद्धिक और आत्मिक तीनों अर्थ उसके समीप आ जाते हैं। वेद को वही जान सकता है जो योग में रमण करने वाला है।

बौद्धिक चर्चा वाला सात्त्विक रूढ़ियों को जानता है, परन्तु जो योगी होता है, वह सात्विक रूढ़ि को भी जानता है वह यौगिक क्रियाओं को भी जानता है और वह विज्ञान को भी जानता है। इन तीनों को जान करके वह वेद रूपी प्रकाश में रत्त हो जाता है।

ब्रह्मरन्ध्र में जो नाड़ियों का चक्र है, उसमें इनका मिलान होता है। ब्रह्मरन्ध्र के द्वारा, ब्रह्मरन्ध्र के स्थान से, वह जो नाग प्राण है उसका अमृत बन करके, सोम बन करके मन और पंखड़ियों के मध्य में जब गति करता है तो वह परमाणु इतना विभक्त हो जाता है कि एक रक्त के बिन्दु के सौ भाग करो उसके बराबर वह बिन्दु होता है। उस सूक्ष्म बिन्दु में प्राण और मन के द्वारा रस नाड़ी के द्वारा, जो सुषुम्ना नाम की जो नाड़ी है वह रसना के अग्र भाग में परिणत कर देते हैं। तो वहाँ एक स्थल होता है उस स्थल का, सुषुम्ना नाड़ी का ध्रुवा में मुख होता है और मानव की जिह्वा का जो अग्र भाग है जिस पर वह संसार का स्वादन लेता है, प्रत्येक पदार्थ का स्वादन उसकी रसना के द्वार पर जाता है तो वह रस जो सोम है, वह पान करता हुआ उस नाड़ी के द्वारा जिह्वा के अग्र भाग में परिणत होता है और जब ओ३म् की ध्वनि होती है, ओ३म् की ध्वनि के साथ में प्राण और मन दोनों ऊर्ध्व गति में होते हैं, मन की गति का अग्राण नहीं होता तो वह रस तरंगें बन करके ऊर्ध्व गति को चला जाता है। कुछ परमाणु बन करके उस नाड़ी के द्वारा रसना के अग्र भाग में उसका मिलान होता है। तो योगियों ने उसे सोम रस कहा है, अमृतमय कहा है। उस रस का पान करना एक आनन्दवत कहलाया गया है। उसके पान करने से वह मन, प्राण और आत्मा उस ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोने के पश्चात इस आनन्द को प्राप्त कर लेता है। तो यह एक ऐसा आनन्द है जो ब्रह्म है। प्रतापमान मानस तत्व है। जैसे मानव ध्रुवा गति में पितर याग करता है, आनन्द की अनुभूति होती है, उससे अरबों गुणा आनन्द की प्रतीति योगी त्याग देता है।

तो वह जो आनन्दमयी धारा है, उसको पान करने वाला जो योगी है, महापुरूष है, उसका पान करके उसे किसी प्रकार की इच्छा

की आवश्यकता नहीं रहती, वह संसार को ऐसे त्याग देता है, जैसे मानव जल को पान करके अपनी उपस्थ इन्द्रिय के द्वारा मूत्र को त्याग देता है। इसी प्रकार विवेकी पुरूष संसार में यह नहीं विचारता कि यह संसार क्या कर रहा है। वह यह नहीं विचारता कि संसार वाणी से क्या उच्चारण कर रहा है। वह उन रसों का पान करता हुआ, वह विवेकी, उस आत्मा के, उस आनन्द में चला जाता है जिससे उसे ऐसी प्रतीति हो जाती है कि यह जो संसार का आनन्द है, वह उसके आगे तुच्छ बन जाता है।

जब वह मन और प्राण दोनों को एक सूत्र में पिरोना जान गया था। संस्कारों का अध्ययन करने के पश्चात उन्हें सूक्ष्म बना करके भोगने लगा। जब वह संस्कारों का भोगता रहा तो ग्यारह वर्ष की आयु में उसका जीवन निर्द्वन्द्व बन गया। तो जब वह निद्रा में तल्लीन होते और निद्रा से जागरूक होते तो ओ३म् की ध्वनि में जाते, ओ३म् की ध्वनि को श्रवण करने वाला मृगराज, सिंहराज मार्ग में सर्वदा उस ध्वनि को श्रवण करते थे।

ओ३म् रूपी धागे में हम उस ब्रह्म को धारण करते रहें। क्योंकि परमात्मा का जो सूत्र है, वह इस प्रकृति के सृष्टि चक्र को चला रहा है। स्वत: गति आ रही है। क्योंकि प्रत्येक मनका प्रत्येक परमाणु, ओ३म् रूपी धागे से पिरोया हुआ है। कोई भी वैज्ञानिक ऐसा नहीं है जो ओ३म् रूपी सूत्र को पृथक कर सके। ओ३म् रूपी धागे से, एक एक कण कण पिरोया हुआ है। एक एक परमाणु पिरोया हुआ है, वह स्थूल बन करके स्वत: गति आ रही है। कहीं सूक्ष्म बन करके स्थूल को गति दे रहा है।

ओ३म् रूपी सूत्र में यह संसार पिरोया हुआ है। तो ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ होने से उसकी एक माला बन गई। उस माला का नाम ही तो धर्म है। यह जो प्रकृति रूपी मनके हैं, अणु, परमाणु ये ओ३म् रूपी चेतना में पिरोए हुए हैं, और इस माला का नाम ही तो धर्म है। जो मानव उस माला को धारण कर लेता है, वह योगी बन जाता है और जो माला को त्याग देता है वह अज्ञानी और दैत्य बन जाता है।

पंच महाभूत ये पांचों मनके हैं और ये मनके एक ऋत में पिरोये हुए हैं और वह जो ऋत और सत है वह ओ३म् रूपी धागे में पिरोये हुए हैं। जब ओ३म् रूपी धागे को जाना जाता है, तो उस सूत्र को जानने वालों को सदैव ब्रह्म ही ब्रह्म दृष्टिपात आता है और वही ब्रह्म कहलाया जाता है। तो ये हैं पंच महाभूतों की प्रतिक्रियाएँ।

प्राण और मन को एक सूत्र में लाने का प्रयास करना चाहिए। क्योंकि यह ब्रह्माण्ड एक सूत्र में पिरोया हुआ है। वह जो एक सूत्र है, उस सूत्र को जानना है। उस सूत्र को हम ओ३म् भी कहते हैं, प्राण भी कहते हैं। उसी सूत्र को महतत्व भी कहा जाता है। तो वह एक सूत्र है, उस सूत्र में प्रत्येक वेद की ऋचा पिरोई हुई है। मानव का एक एक शब्द पिरोया हुआ है। मानव का श्वास प्रश्वास पिरोया हुआ है। मानव की गति भी पिरोयी हुई है। इसीलिए ऋत्त और सत को जानना, उस महान सूत्र को जानना यह हमारा कर्त्तव्य है।

योगी आसन पर विद्यमान हो करके प्राणों का निरोध करता है, वह रेचक के द्वारा करता है, कुम्भक के द्वारा करता है। रेचक और कुम्भक प्राणायाम इस में ओ३म् की ध्वनि का होना, उस सूत्र में इसको पिरोने का नाम साधना कही जाती है।

मानव के द्वारा कुछ मनके हैं और वह उन मनकों को एक सूत्र में पिरोना चाहता है। वे कौन से मनके हैं? मानव में श्वास प्रश्वास आते हैं, वे एक मनके कहलाते हैं। ओ३म् रूपी सूत्र में इन मनकों को पिरोना है। यदि इन मनकों को वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरो देता है, तो प्रत्येक श्वास प्रश्वास, ओ३म् रूपी क्षेत्र में प्रवेश कर जाते हैं तब वह योगी ब्रह्म की चरी को चरने लगता है।

अपने को ओ३म् रूपी क्षेत्र में, ब्रह्म चेतना में पिरो देता है तो यह उसका व्यापक एक याग बन जाता है।

जो मानव संसार में, ओ३म् रूपी क्षेत्र में अपने इस प्राण रूपी मनके को पिरोने लगता है तो उसके जीवन में, उसके शरीरों में रूग्ण नहीं रहते।

प्रभु की रचना त्रिवर्धा कहलाती है। इसी प्रकार तीनों में रमण करने वाली त्रिमात्राएँ हैं। जितनी भी संसार की लेखनियाँ हैं। चाहे वह देवभाषा में हों। चाहे वह जन भाषा में हो। चाहे वे सूर्य मण्डल के प्राणियों की भाषा में हो, चाहे वह किसी भी लोक लोकान्तरों में रहने वाले प्राणी की भाषा में हो परन्तु सर्वत्र भाषाओं में त्रि मात्रा कहलाती है। और त्रि मात्रा वाला शब्द: एक ओ३म् बन करके रहता है। और भू:, भुव: और स्व: तीन ही संसार में व्याहृतियां मानी जाती है। तो यह त्रिवर्धा संसार कहलाता है। परन्तु प्रत्यक्ष में भी तीन ही दृष्टिपात आते हैं। रचना, रचयिता और और जिसके लिए रची गई है, ये तीन कहलाते हैं। परन्तु, इसी प्रकार तीन प्रकार के परमाणु है जो वैज्ञानिकों के मध्य में आया है। संसार का जितना भी विज्ञानवाद अब तक हुआ है चाहे वह राम के काल से ले करके वर्तमान काल तक ले लिया जाए। चाहे वह विष्णु राष्ट्र, सतोयुग के काल से लेकर के त्रेता के काल तक ले लिया जाए, परन्तु संसार में जितना भी विज्ञानवाद हुआ है। उसमें तीनों परमाणुओं की प्रतिभा मानी जाती है। तीन प्रकार के परमाणुओं का आभास किया है। तीन प्रकार के परमाणुओं में सर्वत्र तरंगे ओत प्रोत हैं। तरंगे भी तीन प्रकार की हैं। ऊर्ध्वा,

अन्वेषणाः, कृतिका, ये तीन प्रकार की तरंगे होती हैं। जिनसे ये ब्रह्माण्ड तरंगित हो रहा है। और मानव समाज भी इसी से तरंगित हो रहा है।
प्रत्येक वेदमन्त्र को ओ३म् रूपी सूत्र में गूंथा हुआ है। यह एक सूत्र में पिरोया हुआ सा संसार, दृष्टिपात आता है। तो इस प्रकार का जो चिन्तन है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, जो सूत्रपात हो रहा है, जैसे माला में धागा होता है। माला में सूत्र होता है। ऐसे ही, प्रभु ने, वेद की आभा को जाना। ज्ञानी पुरूषों को, वेद का जो ज्ञान दिया है ओ३म् रूपी सूत्र में, एक एक ऋचा पिरोई हुई है। और उन ऋचाओं में क्या है? संसार का ज्ञान और विज्ञान है। ओ३म् रूपी सूत्र में ज्ञान और विज्ञान पिरोया हुआ है। ओ३म् रूपी सूत्र में, तो हमें उस सूत्र के ऊपर चिन्तन करना है यह ब्रह्म याग कहलाता है, याग का अभिप्रायः है हम सदैव उसी प्रभु की सृष्टि में जागरूक रहते है। हमारा जो ज्ञान और विज्ञान है वह भी प्रभु की ही सृष्टि में रमण कर रहा है। हम संसार में, यह ज्ञान न कहीं से लाते है और न कहीं को जाता है। यह तो प्रभु की महिमा में, प्रभु के ही गर्भ में यह ज्ञान और विज्ञान के गर्भ में हम सब रमण करते हैं।
यह जो चित्त का मण्डल है इसमें सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक दूसरे में क्रियाकलाप कर रहा है और एक दूसरे में पिरोया हुआ है। वेद मन्त्र के उद्गीत गाने से पूर्व ओ३म् का उच्चारण करते हैं, उसमें यह जगत विद्यमान रहता है, यह क्रम हैं। जब उद्गीत गाने वाला अपने शब्दों से एक माला बनाता है तो वह जो माला है उसमें ओ३म् रूपी सूत्र है और उसमें शब्द पिरोए हुए हैं और शब्द पिरोए होने से उसे ऋचा कहा है, उसे मन्त्र कहते हैं और एक शब्द और मन्त्र में जितना ज्ञान और विज्ञान है वह ज्ञान और विज्ञान ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है। इसी प्रकार यह जो सर्वत्र जगत है यह परमपिता परमात्मा उसमें पिरोया हुआ है।
जो वेद मन्त्रों के उच्चारण की जो प्रथम जो ध्वनि है वह ओ३म् कहलाता है। आचार्यों के इसमें भिन्न भिन्न प्रकार के विचार रहे है, परन्तु अनुसन्धानवेत्ताओं ने यह कहा कि जितना भी वेद मन्त्र है, उसमें जो कुछ उच्चारण हो रहा है, वह ब्रह्माण्ड की गाथा गा रहा है। वह ज्ञान और विज्ञान का वाक, ज्ञान और विज्ञान का स्पष्टीकरण कर रहा है। जितना भी संसार का ज्ञान और विज्ञान है, चाहे वह आध्यात्मिकवादी हो, चाहे भौतिकवादी हो, परन्तु जितना ज्ञान और विज्ञान है वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है। जैसे माला होती है। माला में भिन्न भिन्न प्रकार के मनके होते है और वे मनके और सूत्र दोनों भिन्न भिन्न होते है। परन्तु जब उन दोनों का समावेश कर दिया जाता है, अथवा मनके, सूत्र में पिरो दिये जाते है, तो वह माला बन जाती है। तो इसी प्रकार प्रत्येक वेद का मन्त्र ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोने से वह पाठ बन जाता है। और वह माला पाठ बन करके बुद्धिमान का आभूषण बन करके रहता है। जैसे भक्तजन माला धारण कर लेते है, माता अपने कण्ठ में नाना प्रकार के, आभूषणों को ग्रहण कर लेती है, अथवा धारण कर लेती है, इसी प्रकार जो बुद्धिमान है जो पण्डित है, जो विवेकी है, वह इस वेदज्ञ ध्वनि को ओ३म् रूपी सूत्र में पिरो करके, वह एक माला के सदृश उसे कण्ठ में धारण कर लेता है।
जैसे एक श्वास है, उस श्वास पर श्वास गति कर रहा है। वह उस सूत्र के मनके हैं। जब मनके पिरो दिए जाते हैं तो प्रत्येक श्वास ओ३म् रूपी धागे में पिरो दिया जाता है। सूत्र में पिरोने वाला अपने को धन्य स्वीकार करता है और वह प्रभु की कृति को दृष्टिपात करने लगता है।
तो हमें अपने को पिरोना है जैसे शब्द किसी में पिरोया हुआ है। शब्द की उत्पत्ति हो रही है। शब्द गान रूप में गाया जा रहा है। वेद मन्त्र ध्वनि से गाया जा रहा है। उसका कोई सूत्र है। वेद में ओ३म् का उच्चारण किया जाता है।
हमारे यहाँ परम्परागतों से सार्वभौम सिद्धांत माना गया है। कि जब वेद की ध्वनि का उच्चारण करते हैं उसके पूर्व ओ३म् कहते हैं, ओ३म् का उच्चारण करते हैं। अ है यह ईश्वर का वाची शब्द कहलाता है। उ हमारे यहाँ जीवात्मा का वाची शब्द कहलाता है। म् यहाँ प्रकृति का वाची शब्द कहलाता है। जब ओ३म् के आँगन में मानव गति करता है, ओ३म् उच्चारण करता है। अग्नि को चेताने का प्रयास करता है। तो ओ३म् रूपी धागे में, ओ३म् रूपी सूत्र में, प्रत्येक वेद की जो ऋचा है वह पिरोयी हुई है। और वह एक माला के सदृश्य बन जाती है। तो उस माला को कौन धारण कर रहा है? उस माला को वेद का पठन पाठन करने वाला धारण करता है और उसके पश्चात उसमें विवेक हो करके वह उसको धारण करता है। और अपने में महान् बनने का प्रयास करता है और यह कहता है कि मैंने इस माला को धारण किया है, जिस माला को धारण करने के पश्चात मुझे ओर माला की आवश्यकता नहीं है। मुझे स्वर्ण के गहनों की आवश्यकता नहीं है। मेरा कण्ठ उस माला से सजातीय बन गया है। मेरा जो अंग अंग है वह उस ओ३म् रूपी माला में पिरोया हुआ है जैसे वेद का प्रत्येक मन्त्र ओ३म् रूपी धागे में पिरोया हुआ होता है और वह जो ओ३म् रूपी धागा है जिसमें वेद की ऋचा पिरोई है उसमें ज्ञान है, विज्ञान है, तरंगवाद है, परमाणुवाद है। सर्वत्र विवेचना उसके गर्भ में विद्यमान है।

ऋचा के वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोयी हुई है। इसीलिए हमारे आचार्यों ने यह कहा है कि जितना संसार का ज्ञान और विज्ञान है, उसका कोई सूत्र है और जिस सूत्र में वह पिरोया हुआ है कोई उसमें नृत्य कर रहा है, नृत्य हो रहा है, जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही कहीं साधना के रूप में, कहीं विज्ञान के रूप में, कहीं भक्ति के रूप में, कहीं सेवा के रूप में, कहीं वह शांत मुद्रा में विद्यमान हो करके उसको निहारता रहता है, उसको आभायित करता रहता है।

तो विचारना यह है कि उसका कोई सूत्र है और वह सूत्र ओ३म् रूपी धागा है। हम विचारने वाले बनें कि अ जो नाम है वह परमपिता परमात्मा का वाचक है, उ का जो वाची शब्द है वह जीवात्मा का वाची है और म् जो शब्द है इस म् में ही सर्वत्र विचार, सर्वत्र जगत विद्यमान है। और मैं ही मैं पुकारता हुआ मानव अपनी प्रतिभा को नष्ट कर देता है। वह कह रहा है कि यह मेरा पुत्र है वह मेरा पति है। यह मेरा कुटुम्ब है। मैं ही मैं में जीवन की प्रतिभा समाप्त हो जाती है। परन्तु जब वह प्रभु के आँगन में जाता है तो वह तीनों गुणों वाला कहलाता है।

तीनों गुणों को लेकर के मानव यदि संसार में आया है तो इन तीनों गुणों के बिना भी मानव का जीवन नहीं चलता। ये तीनों गुण होने चाहिए। जैसे वेद के मन्त्र में सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान विद्यमान है परन्तु उसके पश्चात भी वह ओ३म् रूपी धागे में पिरोया हुआ है। इसी प्रकार मानव तीनों गुणों वाला होना चाहिए, परन्तु उसका कोई सूत्र होना चाहिए। सतोगुण में रमण करने वाला मानव सत की प्रतिभा में गति करता है। वह सत कह रहा है, सत उच्चारण कर रहा है। कह रहा है मैं सत्य हूँ। सत्य में रमण करने वाला प्राणी अपने में सतोगुणी कहता है। सतोगुणी मानव कौन होता है? जो प्रातःकालीन प्रभु की उपासना करता है, प्रातःकालीन ब्रह्म याग करता है।

यदि मानव को अपने गृह को ऊँचा बनाना हो, प्रजा को, अपने गृहों को शुद्ध बनाना हो तो गृह में प्रातःकालीन वैदिक ध्वनि ब्रह्मयाग के द्वारा होनी चाहिए। वैदिक ध्वनि देवपूजा के साथ होनी चाहिए। उसके पश्चात मध्य और रात्रि के समय जब निद्रा की गोद में जाओ तो श्वास के साथ में ओ३म् रूपी धागे में श्वास को पिरो करके और वैदिक ध्वनि को उच्चारण करके निद्रित हो जाओ। तुम्हें सुखद आनन्द की प्राप्ति होगी।

प्रभु का गुण गान गाने वाला, ओ३म् की उपासना करता है सबसे प्रथम ओ३म् शब्द है वह प्रभु का वाची है। जीवात्मा जो तीनों गुणों वाला है मैं में तीनों गुण, प्रकृति के आ करके यह मैं में जो रत्त हो जाता है इससे मानव को यदि उपराम होना है तो तीनों गुणों को बरतने वाला इस मैं से उपराम होता रहेगा और ओ३म् के आँगन में गति करता रहेगा। अपने प्रत्येक श्वास को ओ३म् रूपी धागे में पिरोने वाला बनेगा तो उसका कल्याण होगा।

हमारे वैदिक साहित्य वालों ने उस ध्वनि के ऊपर बहुत चिन्तन और मनन किया है। क्योंकि यदि मानव का यह शरीर है, रचना हो रही है, रचनाकार रचना कर रहा है, परन्तु जब वह वस्तु रचना में पूर्ण रूपेण आ जाती है तो उस रचना के एक महापिण्ड में नाना प्रकार की ध्वनियों और गतियों का प्रसारण होता रहता है। मानव वाणी उच्चारण नहीं कर रहा है, नेत्रों से अपनी भाषा का वर्णन कर लेता है, तो वह एक अमोघ ध्वनि कहलाती हैं मानव अपने शब्दों से अपनी भिन्न भिन्न वाणी से, मौन रह करके भी अपनी अन्तरात्मा की वार्ता को प्रगट कर लेता है। मानव एकान्त स्थली पर विद्यमान है। वह मुद्रित हो रहा है और अपनी मुद्रा में मुद्रित होता हुआ वह अपने हृदय की सुगन्धी को, वह महान सुगन्ध उसके आश्रय में सुगन्धित हो रही है। वह नहीं कह रहा है कि मैं सुगन्धि कर रहा हूँ। परन्तु उसका जो श्वास है, वह जो एक एक परमाणु अपने में ध्वनि कर रहा है और वह ध्वनि कैसी है? जो ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोई हुई ध्वनि है। वह ओ३म् रूपी ध्वनि का प्रसारण कर रहा है, वह जो ध्वनियाँ आ रही हैं, प्रत्येक मानव उस ध्वनि के लिए ललायित रहता है और साधारण प्राणी यह कहता है कि यहाँ किसी महापुरूष की ध्वनि है। उसके विचारों की, उसकी तपस्या की यह सुगन्धि है।

तो जब प्रत्येक वेदमन्त्र के ऊपर हम अध्ययन कर रहे हैं और अध्ययन में यह चिन्तन करते हैं कि हमें सुगन्धि देनी है, हमें ध्वनि देनी हैं, वह ध्वनि आ रही है, मानव उसका प्रसारण कर रहा है। उसी ध्वनि को लेखनीबद्ध करके अपने को योगेश्वर बना करके ओ३म् रूपी सूत्र में इस वाणी की ध्वनि को पिरो करके वह सुगन्धि प्रसारण कर रहा है।

तीन ही वाक्यों में यह जगत समाहित हो रहा है। जैसे ओ३म् की तीन मात्राएं हैं इनमें यह जगत समाहित है, पुनरूक्ति भी तीन ही प्रकार की रहती है, वेद भी तीन ही कहलाए जाते हैं। उनमें तीन ही प्रकार का विषय कहलाता है। संसार का जितना भी ज्ञान है विज्ञान है उसमें तीन प्रकार की ही याचनाएं हैं। ज्ञान, कर्म, और उपासना यह तीन प्रकार की विद्या वेदों में विद्यमान है। आगे इसका वृक्ष बनता रहता है। अंकुर रूपों में ये तीन ही विद्यमान हैं। प्रकृति के पांच गुण हैं परन्तु, उसमें तीन ही प्रकार के परमाणु हैं।

सबसे प्रथम पार्थिव परमाणु, जल परमाणु, अग्नि परमाणु, वायु इन परमाणुओं को गति देती है और अन्तरिक्ष में परमाणु वास करते रहते हैं।, यह आभामयी जगत कहलाता है। यह त्रैतवाद है यह संसार तुम्हें त्रैतवाद की आभा में परिणत हो रहा है। जब हम त्रैतवाद की वार्ता को ले करके चलते हैं तो हमें यह आश्चर्य होता है कि यह प्रभु! का कैसा अनुपम जगत है। वेद का ज्ञान भी तीन ही प्रकार का है। मानव के शरीर में गुण भी तीन ही हैं। तीन ही प्रकार की यज्ञमान यज्ञ में आहुति दे रहा हैं तीन ही प्रवृत्ति बन रही हैं। मेरे प्यारे प्रभु का यह कैसा अमूल्य जगत है, जिसके ऊपर हमारे ऋषि मुनि एकान्त स्थली पर विद्यमान हो करके अनुसन्धान करते रहते हैं। विशेषकर वह मुद्रित होते रहते हैं। ऋषि मुनियों की सबसे प्रथम मुद्रा में जाना, मुद्रित होना, पंच महाभूतों को जानना, उनको यौगिकता में लाना उसको बाह्य जगत के हृदय में प्रवेश करते हुए हृदय में ही संसार को दृष्टिपात करना, यही उनकी विशेष यौगिकता कहलायी जाती है।

प्रत्येक श्वास की गति को मुद्रित हो करके ओ३म् रूपी सूत्र में पिरो देने का नाम ब्रह्मवर्चोसि है। जब वह ब्रह्मवर्चोसि बन करके ओ३म् रूपी सूत्र में, श्वास को ओ३म् रूपी सूत्र में पिरो देता है।

सोमकेतु मुनि महाराज से ब्रह्मचारियों ने पूछा भगवन! हम याग में सम्मलित होना चाहते हैं ऋषि ने कहा तुम अभी ऐसा नहीं कर सकते, जब उन्होंने यह कहा तो ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु! क्या किया जाए? उन्होंने कहा तुम अन्त:करण में वेद की ध्वनि को ध्वनित करने लगो। जब तुम्हारे अंग अंग से, वैदिक ध्वनि का प्रसार होने लगेगी, जब तुम मन्त्रों की माला बना लोगे। ओ३म् रूपी सूत्र तुम्हारे प्रत्येक श्वास का मनका बन करके ब्रह्मचारी बन जाओगे, तो उस समय तुम्हें हम अपने याग में सम्मिलित कर सकते हैं। तो याग का कितना सूक्ष्म रूप आज से लाखों वर्षों पूर्व क्या, करोड़ों वर्षों पूर्व, ऋषि मुनि अपने में अध्ययन करते रहे। और अध्ययन करने से इसकी प्रतीति होती है कि हम प्रभु के आँगन में आना चाहते हैं, तो प्रत्येक श्वास का मनका बना करके ओ३म् रूपी सूत्र में पिरो करके उसकी जो माला धारण कर लेता है वह मानव परमपिता परमात्मा को प्राप्त हो जाता है। हमें ओ३म् रूपी सूत्र बनाना है और सूत्र बना करके उस सूत्र में मनकों को पिरोना है।

एक समय महर्षि शाण्डिल्य मुनि महाराज से यह प्रश्न किया गया क्या कि महाराज! जब वेदों का गान गाते हो, जब वेदों की ध्वनि में ध्वनित होते हो तो प्रत्येक वेद मन्त्र के साथ में ओ३म् का उच्चारण करते हो तो तुम ऐसा क्यों कर रहे हो? तो, शाण्डिल्य मुनि महाराज ने, उन दार्शनिको से यह कहा कि तुम यह जानते हो कि प्रत्येक वेद मन्त्र में परमात्मा का ज्ञान, विज्ञान और तरंगवाद हैं नाना प्रकार के अणु और परमाणु उसमें रत्त हो रहे हैं, वेदों के मन्त्रों प्रत्येक शब्द ऊँची ऊँची उड़ाने उड़ाता रहता है। चाहे आध्यात्मिक विज्ञान हो, चाहे भौतिक विज्ञान हो, परन्तु उसकी उड़ाने उड़ी जाती हैं एक परमाणु हैं वह वायु मण्डल में गमन कर रहा है वह अपनी प्रतिक्रियाओं में क्रीड़ा कर रहा है। परन्तु मुझे ऐसा स्मरण है वैज्ञानिको ने जब परमाणु को अपने में रत्त करके उसका विभाजन किया तो विभाजन करने से ही उस एक परमाणु में जितना यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड का उसमें दिग्दर्शन हो रहा था। तो एक एक परमाणु में यह संसार, ब्रह्माण्ड का चित्रण होता रहा, जहाँ चित्रण हो रहा हो उस ब्रह्माण्ड का कोई सूत्र अवश्य है जब सूत्र की वार्ता आई तो शाण्डिल्य ऋषि महाराज ने कहा मेरे विचार मे यह आता है क्या मैं ओ३म् का उच्चारण मानव को इसीलिए करना चाहिए क्योंकि जितना भी ज्ञान और विज्ञान प्रत्येक वेद मन्त्रों के गर्भ में हैं उसका कोई सूत्र है तो वह ओ३म् ही हो सकता है। ओ३म् ही प्रत्येक वेद मन्त्र का सूत्र बना हुआ है, प्रत्येक वेद मन्त्र मनके की भाँति है और वह मनका ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है जब ओ३म् रूपी सूत्र में प्रत्येक वेद मन्त्रो का ज्ञान और विज्ञान पिरोया हुआ है तो वह महान सूत्रों का एक माला के सदृश्य वह माला बन जाती है और उस माला को वह अपने कण्ठ में धारण करते अथवा वह जो माला है वह बड़ी विचित्र बन करके रहती है। तो इसीलिए प्रत्येक मानव को ओ३म् रूपी सूत्र में अपने को पिरो लेना चाहिए। ओ३म् रूपी सूत्र में जो मानव अपने को पिरो देता है वह धन्य हो जाता है ऋषि ने अपने में कितना तप किया है। वेद का ऋषि कौन होता है? जो वेद के मन्त्रों को, ओ३म् रूपी सूत्र में पिरो करके कण्ठ में धारण करके और उसमें पाप पुण्य कर्मों का जो चित्त मण्डल में जो संस्कार है, उन संस्कारों का क्षय कर लेता है। अथवा तपस्या के द्वारा प्राणायाम के द्वारा जो उसका क्षय कर लेता है तो वह इस माला को धारण करके मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।

तो मैं विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ हमारे यहाँ यागों का बड़ा विशिष्ट वर्णन आया है। जितना भी संसार का सुकर्म है चाहे वह श्रोत्रीय हो, चाहे वह नेत्रीय हो, चाहे घ्राण के द्वारा मन्द सुगन्ध वाला हो चाहे वाणी के द्वारा ध्वनित होने वाला हो चाहे प्रीति में आने वाला त्वचा में हो इस प्रकार का जो वह याग कर्म है इस प्रकार जो सुकर्म है उस सर्वत्र का नाम याग कहलाता है। परन्तु इसमें यह विशेषता मानी गई है तप की अग्नि में, अनुष्ठान की अग्नि में, जन्म जन्मान्तरों के शुभ और अशुभ संस्कारों का क्षय

होता रहता है, इसी प्रकार जैसे बाह्य जगत में यह अग्नि प्रदीप्त हो करके, साकल्य का सूक्ष्म रूप बना करके वायुमण्डल को पवित्र बना देती है, यज्ञमान की वाणी को पवित्र बना देती है, ब्रह्मा अपने में ब्रह्मित होता हुआ वेद की ध्वनियां करता रहता है, उद्गाता उद्गीत गाते रहते हैं तो वह जो मेरा प्रिय याग है, वह अपने में यागिक रहता है अपने में महान बन करके पवित्रतम् रहता है तो हमें ओ३म् रूपी सूत्र में याग की तरंगो को पिरोना चाहते हैं तो प्रत्येक तरंगे जब इस ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोयी जाती हैं तो, वह माला बन करके इस माला को योगी अपने में धारण कर लेता है और महान बन जाता है। हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए ओ३म् रूपी सूत्र में ज्ञान और विज्ञान को पिरो करके अपने जीवन को महान बनाएं और, उसी में हम रत्त रहने वाले बनें। जब परमपिता परमात्मा ने इस सृष्टि का सृजन किया तो एक परमाणु में दूसरा परमाणु निहित है एक परमाणु दूसरे परमाणु में पिरोया हुआ है, वह परमाणुओं की माला बन गई है। इसी प्रकार लोक लोकान्तरों की माला बन जाती है। नाना पृथ्वियां इसमें पिरोई हुई हैं। ओ३म् रूपी सूत्र में भी जब मनके उसमें पिरोये जाते हैं तो वह माला बन जाती है इस माला को जो भी धारण कर लेता है, अपने कण्ठ में आलिंगन कर लेता है वही मोक्ष को प्राप्त होने लगता है।

तो वेद के ऋषि ने अपने में कितना तप किया है। वेद का ऋषि कौन होता है जो वेद के मन्त्रों को ओ३म् रूपी सूत्र में पिरो करके कण्ठ में धारण करके और पाप पुण्य कर्मो का चित्त मण्डल में जो संस्कार है, तो वह उन संस्कारों का क्षय कर लेता है अथवा तपस्या के द्वारा प्राणायाम के द्वारा उनका क्षय कर लेता है तो वह इस माला को धारण करके मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।

ओ३म् रूपी सूत्र में जब हम प्रत्येक याग की तरंगो को पिरोना चाहते हैं प्रत्येक तरंगे जब इस ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोयी जाती हैं तो वह माला बन करके इस माला को योगी धारण कर लेता है तो वह महान बन जाता है।

हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए उसी ओ३म् रूपी सूत्र में ज्ञान और विज्ञान को पिरो करके अपने जीवन को महान बनाएं, उसी में हम रत्त रहने वाले बनें हमारे यहाँ वेदो का जो विशेष गान गाने वाले हैं उदगीत गाने वाले हैं।

योगीजन समाधि के द्वारा इस ब्रह्माण्ड को निहारते रहते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह जो नाना प्रकार की जो माला बन करके एक दूसरे में ओत प्रोत हो रही हैं लोकों का ज्ञान विज्ञान प्रत्येक वेद मन्त्रों में निहित रहता है एक एक वेद मन्त्र में, ब्रह्माण्ड की प्रतिभा है वह ओ३म् रूपी धागे में पिरायी हुई है और उस धागे में यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड पिरोया हुआ है।

एक एक वेद मन्त्र में ब्रह्माण्ड की प्रतिभा है वह ओ३म् रूपी धागे में पिरोई हुई है। अनुष्ठान का अभिप्राय: यह है कि हम वेद मन्त्र को ले करके, अपने में किसी वाक् को ले करके, अनुसन्धान करें अनुसन्धान करके उसको अनुष्ठान में कर देते हैं अनुष्ठान से मानव की आयु दीर्घ बना करती हैं जैसे हमने एक वेद मन्त्र को लिया है, हमने ओ३म् को लिया हैं ओ३म् की तीन मात्राओं को ले करके हम अग्रणीय बने हैं और उसका अनुष्ठान करते करते अनुसन्धान करते करते अपनी प्रवृत्ति को व्यष्टि से समष्टि में ले गये हैं तो वह हमारा एक अनुष्ठान कहलाता हैं।

वेदमन्त्रों में एक ऐसे शब्द की रचना, उनके समीप आने लगी जो एक ध्वनि के रूप में परिणत हुआ, और वह ध्वनित होता हुआ उसको ओ३म् रूपी सूत्र में वह ध्वनित हो गया क्योंकि बाल्य का जब जन्म होता हैं तो ऋषि मुनियों ने सोचा कि वह तो एक अहंकार कहलाता हैं, उस अहंकार को उन्होंने ओ३म् रूपी सूत्र से उसका समन्वय किया। जब मानव, समाधिष्ट प्राणी हुआ, तो उन्होंने प्राण और अपान दोनों का समन्वय करने का प्रयास किया तो दोनों के मिलान होते ही ध्वनि का जन्म हुआ और वह ध्वनि, जब ध्वनित होने लगी तो उस ध्वनि से ही उनके लिए हम उसको अहंकार के रूप में, जब उसके ऊपर मन्थन किया गया तो वह भी एक ओ३म् की ध्वनि बन गई परन्तु जब ध्वनि बन गई तो विचारा गया कि यह जो जितना भी संसार का साहित्य है अथवा वैदिक मन्त्र है इसके प्रारम्भ में ओ३म् रूपी ध्वनि का प्रतिपादन होता है और ओ३म् जो ध्वनि है वही अहंकार कहा जाता है। बाल्य के जन्म होते ही उसकी स्मरण शक्ति उसके हृदयों में निहित रहती है। तो विचार विनिमय क्या है यह मानव की भूमिका बन गई, क्रियाकलाप की भूमिका बनी तो यह विचारा गया कि यह जो प्रकृति हैं हमारा जो प्रत्येक द्वार है उस द्वार का समन्वय प्रकृति से रहता है और प्रकृति में ही सात प्रकार की धारा कहलाती है सात प्रकार की धारा जिसमें एक धारा का नाम जमदग्नि कहा गया है, द्वितीय धारा का नाम विश्वामित्र कहा गया और तृतीय धारा का नाम वशिष्ठ कहा गया और चतुष धारा का नाम कश्यप कहा गया और पंचम धारा का नाम गौतम के रूप में परिणत हुआ और, वह जो सातवी जो धारा हैं उसका नाम अत्रि कहलाया है। तो यह सात प्रकार की धाराओं का जन्म हुआ। सात प्रकार की धाराओं के रूप में उन सबको ऋषि कहने लगे। उन्हीं को सप्त होता कहने लगे। तो वेद मन्त्रों के भी ऋषि मुनियों ने समाधिष्ट हो करके इन शब्दों की रूप रेखा बनाने के लिए वह तत्पर हुए, कि यही वास्तव में हमारा जीवन है, हम जब इस प्रकार की धाराओं को लाने का प्रयास करेंगें तो हमारे मानवीय जीवन की

धारा विचित्र बन जायेगी। तो आगे जब उन्होंने और गम्भीरता से अध्ययन किया तो अध्ययन करने के पश्चात वेद की आख्यिका को ले करके उसको अन्तर ध्वनि में ले गये, अन्तर ध्वनि जो मस्तिष्क के अग्र भाग में जिसे त्रिवेणी कहते हैं जहाँ ईंगला, पिंगला और सुषुम्ना तीनों का समन्वय होता है तो वहाँ एक ध्वनि का जन्म हुआ और वह जो ध्वनि है वह ध्वनित हो करके वह बाह्य जगत मे ध्वनित हो करके मानव के समीप आई। तो सृष्टि के प्रारम्भ में ऋषि मुनियों ने विद्यमान हो करके यह विचारा कि मानव का एक क्रियाकलाप होना चाहिए, क्योंकि मानव जीवन में सुगन्धि ही चाहता है। यह दुर्गन्ध नही चाहता, सुगन्ध चाहता है यह ऊर्ध्वा में जाना चाहता हैं।

मानव को सदैव अपनी वाणी में पवित्र रहना चाहिए, मानव को अपने में तपस्या का क्रियाकलाप बनाना चाहिए जिससे मानव अपने जीवन में पवित्र धाराओं में रत्त होता हुआ अपने को पवित्र बनाते रहे, अपनी वाणी को वेदज्ञ ध्वनि में परिणत करता रहे, इस वेद ध्वनि में ही अपनी ध्वनि को जानता हुआ वह जो ओ३म् रूपी ध्वनि हैं वह उस ध्वनि में ध्वनित रहना चाहिए वह ध्वनि एक शाश्वत हैं वह सृष्टि के प्रारम्भ से वेदमन्त्रों के प्रारम्भ की एक धारा हैं भू: भुव: स्व: में यह सर्वत्र वेदमन्त्र गुथा हुआ है।

तो इसीलिए हमें, उस धारा में रत्त हो जाना चाहिए अनुष्ठान करना चाहिए। अभिप्राय: यह है कि हम वेदमन्त्र को ले करके अपने में किसी वाक् को ले करके अनुसन्धान करें अनुसन्धान करके उसको अनुष्ठान में ले जाते हैं अनुष्ठान का अभिप्राय: यह है कि उसको जानना, जिस वस्तु को हम जानना चाहते हैं उसको हम जाने और जान करके ही उसमें पिपासी रह करके, जिज्ञासा हो जाये उससे मानव की आयु दीर्घ बना करती हैं। जैसे हमने एक वेदमन्त्र को लिया है, हमने ओ३म् को लिया हैं, ओ३म् की तीन मात्राओं को ले करके हम अग्रणीय बने हैं और उसका अनुष्ठान करते करते, अनुसन्धान करते करते अपनी प्रवृत्ति को व्यष्टि से समष्टि में ले गये हैं, तो ऋषि मुनियों के अनुष्ठानों की जो प्रवृत्तियां थी वे कितनी विचित्र थी एक समय मैंने बाल्यकाल में अपने पूज्यपाद गुरूदेव के द्वारा पंहुचा तो उन्होंनें चौबीस वर्षों का एक अनुष्ठान किया था और वह अनुष्ठान क्या था वह वेदमन्त्रों की ध्वनि को माला पाठ में परिवर्तित करना चाहते थे माला पाठ के उदगीत को जानना चाहते थे, उसका प्रादुर्भाव कहाँ से हुआ है उस पर अनुसन्धान होता रहा अनुसन्धान करते रहते हैं।

ओ३म् रूपी सूत्र में, ओ३म् रूपी धागे में तुम इसे पिरोना चाहते हो। ब्रह्मचारी शान्त मुद्रा से इसे अपने में ग्रहण कर रहे हैं। माता जब लोरियों का पान करा देती है, उसमें ओज और तेज का भरण कर देती है तो ब्रह्मचारी अपने में महान् बन जाता है।

इसीलिए हमारे यहां ब्रह्मयाग का वर्णन आता रहता है। ब्रह्म याग किसे कहते हैं? ब्रह्म का चिन्तन करना हैं और माता यह कहती है, कि हे ब्रह्मचारी! तू उस प्रभु को प्रत्येक स्थली में दृष्टिपात कर। माता यहां नाना मन्त्रों का अध्ययन करा देती है और मन्त्रों का अध्ययन करा करके ब्रह्मचारी उसके पश्चात ब्रह्मयागी बन जाता है। वह ब्रह्मयागी बन जाता है।

जो अपने मन और प्राण का समन्वय करना जानते हैं, और ओ३म् को अपनी आभा में रत्त करना जानते हैं, वही तो समाज को एक मार्ग दे सकते हैं, विचित्रता प्रदान कर सकते हैं। परन्तु मानव भी प्रसन्न हो रहा है। हमारे यहां एक महापुरूष तप रहा है बारह वर्ष हो गए हैं, वह विश्राम भी नहीं कर रहा है, वह खड़ा ही रहता है, परन्तु उसमें अवगुण कितने हें उसको कोई नहीं दृष्टिपात कर सकता। वह सुरापान कर रहा है, सुल्फापान कर रहा है, अपने अच्छाई के परमाणुओं को नष्ट कर रहा है और वह समाज को और दूषित कर रहा है। भगवान् कृष्ण ने ऐसे तप का निषेध किया है, हम परम्परागतों से निषेध करते चले आए हैं क्योंकि हमारे यहां तो यह है कि अध्ययन करना चाहिए, आत्मकल्याण के लिए, मानव का दर्शन होना चाहिए। जहां मानव का दर्शन होता है वहीं तो मानव अपने जीवन को ऊँचा बनाता है, ज्ञानी अपने में पवित्र कहलाता है।

ओ३म् की ध्वनि को आचार्य जनों ने अपने में सिद्ध किया हैं परन्तु जिस भी काल में ऋषि मुनि अपने में यह विचार विनिमय करने लगते हैं कि ओ३म् के उच्चारण करने से वेद का क्या समन्वय रहता है? तो उसी काल में ऋषि मुनियों ने इसका निपटारा किया और यह कहा कि प्रत्येक वेदमन्त्रों में उस परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान है और उसमें संसार का ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। वह ज्ञान और विज्ञान अपने में निहित रहने वाला है। इसीलिए ओ३म् रूपी सूत्र में जितना भी संसार का ज्ञान और विज्ञान है वह उसमें पिरोया हुआ है अथवा उसी में वह रत्त रहने वाला है। मानव का तप है वह इन्द्रियों में पिरोया हुआ है वाक् इन्द्रियों से पिरोया हुआ है उसकी शक्ति की जो प्रेरणा है वह उस महान देवतव आत्मा से कटिबद्ध रहने वाला है। इसी प्रकार जितना भी संसार का ज्ञान और विज्ञान है, चाहे वह सूर्य लोक में जाने वाला विज्ञान हो, चाहे वह चन्द्रमा में जाने वाला विज्ञान हो किसी भी प्रकार के विज्ञान के वाङ्गमय में जब मानव प्रवेश करता है तो वह विज्ञान किसी सूत्र में पिरोया हुआ है। वही सूत्र वह चेतना के रूप में हैं वह ओ३म् रूपी धागे के रूप में विद्यमान रहता है तो जब हम अपने प्रभु को अपना सखा, अथवा

प्राण अपने में यह स्वीकार करते हैं कि हम एक सूत्र में पिरोये हुए हैं तो सूत्र में हम सदैव सूत्रित होते चले जाते हैं। मुझे वह काल जब स्मरण आने लगता हैं जिस काल में ऋषि मुनि अपने में विद्यमान हो करके उस परमपिता परमात्मा को अतिथि के रूप में स्वीकार करते रहे हैं यागिक पुरूषों ने उस परमपिता परमात्मा को अतिथि के रूप में माना है परन्तु जैसे गृहाश्रम में एक बुद्धिमान अतिथि आता है और वह अतिथि अपने गुणों का वर्णन करता हुआ उस गृहपति को, ऊँचा बनाता रहता है गृह स्वामी गृह स्वामिनी अपने में प्रसन्न होते रहते हैं। ०५ १० १९८६

प्रत्येक वेदमन्त्र किसी सूत्र में पिरोया हुआ है और वह सूत्र क्या है? वह सूत्र ओ३म् रूपी सूत्र है। जिसमें संसार का ज्ञान और विज्ञान समाहित रहता हैं।

परमपिता परमात्मा महान है क्योंकि वह भिन्न भिन्न प्रकार से शब्दों की माला बनाता रहता है और उस माला को अपने में धारण करता रहता है। तो इसीलिए आज हम उस माला के कुछ मनकों की चर्चा करते रहते हैं जैसे नाना प्रकार के जो मनके हैं, वे एक सूत्र में पिरोये हुए हैं जैसे हमारा प्रत्येक वेद मन्त्र ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है क्योंकि वेद की भिन्न भिन्न ऋचाएं हैं, उन ऋचाओं में, मन्त्रों में भिन्न भिन्न प्रकार का ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है जैसे यागों का कर्मकाण्ड है, यह भी हमें स्वीकार करना है कि ज्ञान, कर्म और उपासना वेदों के तीन विषय माने गये हैं ज्ञान कहते हैं जानने को, और कर्म कहते हैं उसके अनुसार कर्म करने को, और उपासना कहते हैं उसके परिणाम अथवा उसका सदुपयोग करने को। यह ज्ञान, कर्म और उपासना मानी गई है। जैसे हमारे यहां हिमालय की कन्दराओं से गंगा का स्रोत गमन करता है और गमन करता हुआ वह पृथ्वी के समतल भू भाग में उसका आगमन होता है तो कृषक और वैज्ञानिक उस जल का उपयोग करते हैं तो यह कर्म किया गया और कर्म करने के पश्चात उसका उपयोग, प्राण सत्ता के लिए मानव, कृषक अपनी भूमि में अन्नाद को उत्पन्न करता रहता है वही अन्नाद भिन्न भिन्न रूपों में, उसका रूपान्तर होता रहता है। उसकी महानता का प्राय: वर्णन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है।

तो वेद का ज्ञान, कर्म और उपासना उसमें भिन्न भिन्न प्रकार की धाराएं हैं। कहीं ज्ञान की हैं कहीं विज्ञान की हैं उस विज्ञान में भी भिन्न भिन्न परमाणु के गुरूतव के हैं तरलत्व के हैं और तेजोमयी के हैं। और वायु और अन्तरिक्ष उसके लिए अवान्तर भेदन माने गये हैं। वह जो इतने भेदों, वाला वेदों में जो ज्ञान और विज्ञान है उस विज्ञान को, बुद्धिमान मन्त्रों के द्वारा उदगीत गाता रहता है। ओ३म् रूपी सूत्र में, उस एक एक मनके के ज्ञान और विज्ञान में उसको पिरो देता है, तो वह विज्ञान में रत्त हो जाता है।

परमपिता परमात्मा का नाम ओ३म् कहलाता है। गुण अनन्त माने गये हैं। परन्तु मुख्य रूप में ओ३म् कहलाता है क्योंकि जो वाणी का उदघोष है, वही शब्द तो जब बाल्य संसार में माता के गर्भ से आता है तो वह भी ओ३म् का उदगीत गाता है। व्याकुल हो रहा है, संसार में आ करके रूदन करता है, परन्तु ओ३म् की ध्वनि का व्याकुलता से गान गाने लगता है, यही साधना है। यौगिकजन जब मन ओर प्राण के ऊपर इसको साध लेते हैं तो यही ओ३म् उसे योगेश्वर बना देता है।

जिस भी काल मे हम ओ३म् की विवेचना करते है। तो अन्त में म् आता है और म् के निचले भाग में हलन्त होता है मानो एक कृतिका होती है तो संसार में जितना भी ये प्राणीमात्र है ये म् में गृहित हो रहा है। म् में परणित हो रहा है। यह मेरा है, ममता मेरी है मानो मेरे पन में संसार ओत प्रोत रहता है तो वह कहता है इदन्न मम कि यह मेरा नही हैं मैं कौन हूँ इसके ऊपर विचार विनिमय करता है तो महर्षि कपिल जी ने यह कहा कि इदन्न मम यह मेरा नही हैं, वह सर्वस्व सम्पदा आपकी है। आप कौन हैं यह मैं नही जानता, आप कौन हैं इस स्वरूप को भी मैं नही जानता मैं कौन हूँ उस स्वरूप को भी मैं नही जानता मैं तो केवल इदन्न मम जानता हूँ जब यह वाक्य महर्षि कपिल जी ने कहा तो महर्षि गौतम बोले कि प्रभु! मैं कौन है मैं की ये ध्वनि कहाँ से आती है उन्होंने कहा कि यह मैं की ध्वनि अन्धकार में से आती है यह मैं शब्द का प्रतिपादन तथा इसकी उपलब्धि केवल अन्धकार से होती है अन्धकार अज्ञान को कहते हैं अन्धकार वेद को नही कहते हैं अवेद को कहते हैं इसीलिए अन्धकार से ही इसकी उत्पति होती है उसमें से एक ध्वनि उत्पन्न होती है और वह ध्वनि हमें इस संसार से लिपायमान कर देती है। वेद का ऋषि कहता है कपिल जी कहते हैं प्रभु! मेरे विचार में यही आ रहा है कि अन्धकार को मानव को अपने से दूर कर देना चाहिए अन्धकारम ब्रह्मे कृतं जब अन्धकार समाप्त है। जाता है तो उस समय यह अधिकार स्वत: प्राप्त हो जाता है कि इदन्न मम यह मेरा नही हैं इदन्न मम है यह कहता हुआ मानव अपने का त्याग कर देता है, अपनी दूरिता को त्याग देता है कि यह दूरिता होते हैं, अत: हृदय में कितने अन्धकार के अङ्कुर होते हैं उन अङ्कुरों को समाप्त कर देता है।

जो, प्रभु के जगत में दृष्टिपात करता है वह संसार के जगत में भी, वह प्रकृति के जगत में भी है लेकिन वह प्रकृति के जगत में नही गया है। वह मैं के जगत को त्याग करके ओ३म् के जगत में आ करके जहाँ प्रकाश है, जहाँ आनन्द है, जहाँ मानवीय दर्शन है जहाँ

रात्रि का क्षय हो जाता है, दिवस का उदय हो जाता है।
तीनों प्रकार के परमाणुओं को ले करके हम संसार में गति करते हैं। नाना प्रकार के अणु और परमाणु नाना प्रकार की वृत्तियों में रत्त हो करके, विज्ञानवेत्ता बन जाते हैं। इसी त्रिवाद को ले करके महर्षियों ने तीन पदार्थों का वर्णन किया है। आत्मा, परमात्मा और प्रकृति ये अनादि हैं। यह त्रिवाद कहलाता है। इन तीन विचारों में ये तीन मात्रा ओ३म् की कही गई है। अ, उ और म् यह तीन मात्रा वाला है। तीन प्रकार की विद्या है। ज्ञान, कर्म और उपासना त्रिवाद का ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आता रहता हैं। यह त्रिवाद कहलाता है।
ओ३म् की तीन मात्राएं है और तीन गुण कहलाते है रजोगुण तमोगुण, सतोगुण और तीन लोक कहलाए गये है भू: भुव: स्व:। इसी प्रकार यह त्रिवाद कहलाया जाता है तीनों गुणों को अपने में शमन करते हुए ऊर्ध्वा में गमन करके आध्यात्मिकवाद में परिणत हो जाना चाहिए।
तीन मात्राओं में ओ३म् की अ, उ और म् ये तीन मात्राएं है तीनों में यह त्रिवर्धा कहलाता है। इस त्रिवर्धा को विचारना है इस त्रिवर्धा को ले करके हम अपने जीवन को ऊँचा बनायें।
विज्ञानवेत्ता तीन प्रकार के परमाणुओं को माप लेता है गुरूतव, तरलतव और तेजोमयी यह तीन पग हैं। यह मापने से जब इन तीन परमाणुओं को विज्ञानवेत्ता जान लेता है तो वैज्ञानिक बन जाता है। रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण जब इन तीनों को जान लेता है। तो विवेकी पुरूष बन जाता है अ, उ और म् ओ३म् की इन तीन मात्रा को जान करके वह वेद के अन्तिम मर्म को जान लेता है और परमपिता परमात्मा को प्राप्त हो जाता है तो यह संसार त्रि वर्धा कहलाता है और त्रि वर्धा में ही देवता जन इस पृथ्वी को मापते रहे हैं और माप करके इसको त्यागते रहे हैं ओर दूरिता का विनाश करते रहे हैं इसे प्रकाश में लाने का सदैव प्रयास करते रहे हैं।
वेद मन्त्र के प्रारम्भ में, ओ३म् की ध्वनि होती है ओर जब वह ध्वनि होती है तो प्रत्येक वेदमन्त्रों में जो ज्ञान है अथवा विज्ञान है वह सर्वत्र ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है जब वह पिरोया जाता है तो नाना ऋचा रूपी जो मनकें है उसमें जो ज्ञान और विज्ञान है वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया जाता है। तो उसकी माला बन जाती है। कैसी विचित्र माला है, जिस माला को धारण करने के पश्चात माला में तल्लीन हो जाता है। जैसे हमारे यहां यज्ञमान यज्ञशाला में अपनी वाणी और शब्दों को एक सूत्र में पिरो देता है और वह सूत्र क्या है जिसमें पिरोता है वह सूत्र हमारा है स्वाहा।
उस परमपिता परमात्मा की महिमा का हम सदैव वर्णन करते रहते हैं, प्रत्येक वेदमन्त्र, उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान सूत्र में पिरोया हुआ है जैसे नाना प्रकार के मनके सूत्र में पिरोने से वह माला बन जाती है इसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र, जिसमें ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है, वह एक ही सूत्र में पिरोया हुआ है। वेद का मन्त्र उदगीत गाने वाला प्राय: जब ओ३म् की ध्वनि के साथ उदगीत गाता है तो वह वेदमन्त्रों की ऋचा को ध्वनित करता रहता है। इसीलिए जितना भी विषय वेदमन्त्र में निहित रहता है चाहे वह विज्ञान में हो, चाहे वह आध्यात्मिक विज्ञान में हो, परन्तु ओ३म् रूपी शब्द, उस ब्रह्म सूत्र में पिरोया हुआ है।
वेद तीन प्रकार की विद्याओं में कटिबद्ध हो रहा है। सबसे प्रथम ज्ञान उसके पश्चात कर्म और उसके पश्चात उपासना में रत्त होता है, अध्ययन करने की तीन मात्राएं होती हैं जिनमें ज्ञान, कर्म ओर उपासना समाहित रहता है। सबसे प्रथम अ शब्द है उसके पश्चात उ और म्। ये तीन शब्द कहलाते हैं, जो ओ३म् की आकृति बन करके, ये तीन शब्दों में, ये तीन मात्राओं में सर्वत्र विद्या के, सब शब्दों में समाहित हो रहे हैं। तीन ही प्रकार के गुण है। जिन्हें देवत्व के रूप में भी वर्णित किया गया है। सबसे प्रथम पालना और पालना के पश्चात अनुशासन और उत्पति के मूल में जिन्हें सतोगुण, रजोगुण, ओर तमोगुण कहते हैं। ये तीन प्रकार के गुण कहलाते हैं सबसे प्रथम उसमें भी पालना का प्रसंग आता है। पालना में विष्णु कहलाता है और रजोगुण में वह शिव कहलाता है, तमोगुण में ब्रह्म कहलाता है, तो उत्पति के मूल में ब्रह्म है और अनुशासन के रूप में शिव कहलाता है और पालना के गर्भ में विष्णु कहलाता है, विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का है जो हमारा कल्याण करने वाला है, वह कल्याण में ही निहित रहने वाला है। इसीलिए उसे विष्णु कहते हैं इसी प्रकार भू: पृथ्वी है भुव: आपो है और जिसे हम स्व: कहते हैं उसमें हम रत्त रहते है।
यह ऋषियों की बड़ी एक महान उपलब्धि रही है, जिसके ऊपर हमें विचारना है, अन्वेषण करना है जैसे, एक मानव वेद मन्त्रों का उदगीत गा रहा है। प्रारम्भ में वह ओ३म् उच्चारण कर रहा है अ, उ और म् ये तीन अक्षर कहलाते हैं तीनों धाराएं जब वह उनका उदगीत गाता है तो उसके पश्चात वह मन्त्र की मन्त्रणा करता है। वह वेदमन्त्रों का उदगीत गाता है और उदगीत गाता हुआ वह ओ३म् में पिरोया हुआ है। जैसे नाना प्रकार के मनके होते हैं और वे मनके एक सूत्र में पिरोये जाते हैं तो वह माला बन जाती है।

इसी प्रकार यह जो ब्रह्माण्ड है यह माला के सदृश्य है। इसी प्रकार ये जो वेदमन्त्र है ये भी माला के सदृश्य हैं। ओ३म् रूपी सूत्र में ओ३म् रूपी धागें में यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड का, एक एक वेदमन्त्र वेदों का पिरोया हुआ है और उसकी माला बन जाती है। इसी प्रकार, वही कहीं ज्ञान काण्ड रूपी माला है कहीं कर्म काण्ड रूपी माला है कही उपासना काण्ड रूपी माला है तो यह यह त्रिवर्धा बन जाती है, यह त्रि विद्या कहलाती है। ज्ञान कर्म और उपासना इसकी माला बन करके वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोयी जाती है इसी से जो उदगाता उदगीत गाता है, यज्ञशाला में उदगीत गा रहा है उदगान गा रहा है वेदमन्त्रों की ध्वनि के सहित वह ओ३म् का उच्चारण मन्त्र से पूर्व करता है क्योंकि जितना भी एक एक अक्षर है, वेदमन्त्र में, वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया जाता है इसी प्रकार जितना भी संसार का ज्ञान है अथवा विज्ञान है कर्मकाण्ड है वह सब ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ है जैसे नाना प्रकार के लोक लोकान्तर हैं, जैसे यह पृथ्वी है, इस पृथ्वी का जो सूत्र हैं वह सूत्र सूर्य है और सूर्यो का जो सूत्र है वह बृहस्पति है और बृहस्पति का जो सूत्र है वह आरूणि मण्डल है।

वेदमन्त्रों में यह जो ओ३म् की ध्वनि आती है वह आगे वेद के मन्त्रों को, शब्दों को सजातीय बनाती है तो वह पवित्र सूत्र बन कर वेदमन्त्रों में जो ज्ञान है, विज्ञान है कर्म काण्ड है मानवीयता है वह भी सब उसमें पिरोई गई है।

इस आत्मा के लिए तीन प्रकार की विद्याओं का वर्णन आता रहा है और इसके शरीर भी प्रायः तीन ही माने गये है। एक ईश्वरीय लोक है, जिसमें वह तीन मात्राओं में निहित और गुथा हुआ रहता है। वह तीन मात्रा कौन सी है अ, उ और म् यह ओ३म् की वृत्ति में रत्त रहता है और इसमें तीन गुण निहित हो जाते है और यह शरीर तीन गुणों वाला बन जाता है। रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण और ये त्रिविद्या वाला बन जाता है। ज्ञान, कर्म और उपासना यह आत्मा की वृत्ति कही जाती है। और तीसरा जो शरीर है वह देवलोक कहा जाता है। जहाँ देवताओं का वास रहता है। देवता कौन है? हमारा जो स्थूल शरीर है यह देव लोक कहा गया है और देव लोक में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और अन्तरिक्ष ये पंच महाभौतिक जो देवालय है, देवताओं का, यह आत्मा का लोक माना गया है।

यह जो प्राण हैं यह ब्रह्माण्ड के लिए दस स्तम्भ कहलाये गये हैं। ऐसे ही यह जो सूक्ष्म शरीर हैं इसके भी दस प्राण कहलाये जाते हैं और वह प्राण एक दूसरें में पिरोये हुए हैं वे माला के मनके होते हैं। जैसे वेदमन्त्रों में ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोने से वह प्रकाश की माला बन जाती हैं। इसी प्रकार जैसे परमपिता परमात्मा का वह अमूल्य जगत हैं नाना प्रकार के लोक लोकान्तर हैं, नाना प्रकार के सौर मण्डल हैं नाना आकाश गंगाएं हैं, नाना निहारिकाएं हैं और अवन्तिकाएं कहलाती हैं यह सर्वत्र एक सूत्र में पिरोयी हुई हैं। तो यह ब्रह्माण्ड एक माला के सदृश्य दृष्टिपात आता रहता हैं यह जो एक माला है, और जब माला का विच्छेद हो जाता हैं तो अपार कष्ट होता है। इसी प्रकार माला का, एक भी मनका मेरे लिए विच्छेद न हो जाये, ऐसा सदैव साधक अपने में याचना कर रहा हैं और वह कहता है कि मेरा जो प्राण है जो दस प्राण है यही ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोये हुए हैं। जैसे वेद की ऋचाएं इसी प्रकार यह प्राण भी उस परमपिता परमात्मा में ओ३म् रूपी प्राण माना गया है।

वेदमन्त्र एक मनके सदृश्य माना गया है, उस वेदमन्त्र के ऊर्ध्वा में और ध्रुवा में ओ३म् की प्रतिभा का वृत्त होता रहा है और जब वेदमन्त्र, रूपी ओ३म् सूत्र से सजातीय बना दिया जाता है तो प्रत्येक वेदमन्त्र मनका बन करके वह सूत्रों में सूत्रित हो जाता है। इसीलिए मानव को अपने में सूत्र और मनका बन करके उसमें धारयामि होना चाहिए।

यह जो ब्रह्माण्ड है, यह परमात्मा का चित्त कहलाता है। इसमें नाना प्रकार की धाराएं विद्यमान रहती हैं और एक धारा दूसरी में परिणत होती रहती है। यह सब ब्रह्म सूत्र में पिरोयी होती हैं जैसे प्रत्येक वेद की ऋचा, ओ३म् रूपी धागे में ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोये जाते हैं इसी प्रकार वे ब्रह्म में सर्वत्र ब्रह्माण्ड को पिरो लेते हैं। वेद का ऋषि तो यहाँ तक कहता है कि इस प्रकार के अनन्य ब्रह्माण्ड हैं। अनन्य ब्रह्माण्ड इस प्रकार के जिसके ऊपर ऋषि मुनि अपने में मौन हो जाते हैं। तो जब परमाणु का विभाजन किया गया, यन्त्रों के द्वारा तो मुझे एक ही परमाणु में विभक्त हो करके नाना ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आने लगे। तो एक एक परमाणु में ब्रह्माण्ड हैं और ब्रह्माण्ड में परमाणु हैं तो यह परमपिता परमात्मा की महिमा जिसमें जो ब्रह्म हैं जो ब्रह्माण्ड का सूत्र है नाना प्रकार के मनके बन करके ब्रह्म सूत्र में पिरोये जाते हैं तो यह जगत एक माला के सदृश्य दृष्टिपात आता है।

एक एक, जो श्वास हैं वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोया हुआ होता है उसका एक एक, शवास नेत्रों की ज्योति भी याग में पिरोयी हुई रहती है। तो यह यागिक की माला बन करके उस याग को धारण करके याग में परिणत हो जाता है।

याग का अभिप्रायः है कि मृत्यु से पार होना है याग का अभिप्रायः है हिंसा से रहित रहना पंच महाभौतिकता से रहित है आत्मा हिंसा से रहित है मन प्रकृति का तन्तु हैं इसीलिए मानव को हिंसा से रहित रहना चाहिए और, वह मनका बना करके एक एक

वेदमन्त्र देवता से पिरोया हुआ है उसी देवता की प्रतिभा को ले करके एक माला बनानी चाहिए और उस माला को जो धारण करता है प्रत्येक आहुति मनका बन करके वह ओ३म् रूपी सूत्र में पिरोयी जाती हैं और पिरोने से वह माला बन जाती है उस माला को धारण करने वाला यह जगत कहलाता है। पंच महाभूत कहलाता है। पंच महाभूतों की माला बनती है। तो लोक बन जाते हैं, लोकों की माला बनती है, तो यह गन्धर्व बन जाते हैं, तो इस प्रकार की माला बनती रहती है। तो यह ब्रह्माण्ड मालाओं के सदृश्य हो जाते हैं, इस माला को धारण करने वाला साधक, अपने में साधना में परिणत हो जाता है।
वेदमन्त्र का विभाजन किया, विभक्त करके इसमें यही आया कि पंच महाभूत पांचों मनके हैं और वह मनके एक ऋत में पिरोये हुए हैं और वह जो ऋत और सत है वह ओ३म् रूपी धागे में पिरोये हुए हैं। जब ओ३म् रूपी धागे को जाना जाता है, तो उस सूत्र को जानने वाले को सदैव ब्रह्म ही ब्रह्म दृष्टिपात आता है और वही ब्रह्म कहलाया जाता है।
यह संसार त्रिवर्धा में रत्त रहने वाला त्रिवर्धा कहलाता है यह संसार तीन प्रकार के विभागों में रत्त हो रहा है पालन करने वाला, रचाने वाला और जिसके द्वारा वह रची जाती है यह त्रिवर्धा कहलाता है। जैसे ओ३म् की तीन मात्रा कहलाती है जैसे अ उ और म् तीन मात्राओं में जितना भी अक्षर बोध है वह इसी के आश्रित रहता है, इसी प्रकार भूः भुवः स्वः जब हम गायत्राणी छन्दों के पठन पाठन में जाते हैं तो भूः भुवः स्वः ये तीन व्याहृतियों का उदगीत गाते हैं। तीन व्याहृति में इसमें ऋणित कर देते हैं तो यह संसार तीन प्रकार की व्याहृतियों में रत्त हो रहा है। तो तीन प्रकार का भूः भुवः स्वः यह तीन प्रकार का लोक माना जाता है और तीन ही प्रकार के परमाणु होते हैं तरलत्व और, और गुरूतव और तेजोमयी इन तीन प्रकार के परमाणुओं के ऊपर विज्ञान अपने में नृत कर रहा है इसी प्रकार यह जो संसार की रचना होती है यह भी तीन प्रकार के रूपों में होती हैं एक रचाने वाला, एक रचने वाली वस्तु जिससे रचाया जाता है, और भोगतव्य करने वाला आत्मा है और बनाने वाला वह चेतन्य देव है और प्रकृति अपने आप में रचित्त कहलाती है तो इसी प्रकार यह संसार त्रिवर्धा कहलाया जाता है इसीलिए यज्ञशाला में जब भी यज्ञमान अपने में निर्माण करता है तो तीन प्रकार की पेड़ी बनाता है तीन प्रकार का उसकी मेखला बनाता है और मेखला बना करके, भूः भुवः स्वः यह तीन मेखला के रूप में परिणत होती हैं।
योग की परिभाषा में यह कहा कि योग का जो देवता है वह ओ३म् है। इसीलिए ओ३म् सूत्र रूप में प्रत्येक परमाणु में पिरोया जाता है। यह इतना सूक्ष्म कण है कि उसमें गति करता हुआ योगी जन उसको जान लेते हैं और दृष्टिपात करते हैं।
हे मानव! तू अपने जीवन में महानता के लिए सदैव गमन करता रहे इसी में तेरे जीवन की प्रतिभा बन करके रहे। विचार विनिमय क्या? रामम् ब्रह्मे कृतं माता कौशल्या के गर्भ से पुत्र का जन्म हुआ और जन्म होते ही उन्होंने अपने में ओ३म् का उद्गीत गाया। बाल्य जब जन्म लेता है माता के गर्भ से वह स्वरों में देव भाषा में देव का रूदन करना प्रारम्भ कर देता है मानो देखो, अपने में ब्रह्मणा सम्भवे बाल्य का जन्म हुआ। आज अपने विचारों को देता मैं बहुत दूरी चला गया हूँ।
ओ३म् प्रतिष्ठ॥ यजुर्वेद २.१३
पदार्थः हे (ओ३म्) ओंकार के अर्थ जगदीश्वर! आप (बृहस्पतिः) प्रकृत्यादि के पालन करने हारे (इह) इस संसार वा विद्वानों के हृदय में (प्रतिष्ठ) कृपा करके इस यज्ञ वा वेद विद्यादि को स्थापन कीजिये॥
ओ३म् क्रतो॑ स्मर। क्लि॒बे स्म॑र। कृ॒त स्म॑र॥ यजुर्वेद ४०.१५
पदार्थः हे (क्रतो) कर्म करने वाले जीव! तू शरीर छूटते समय (ओ३म्) ओ३म् नाम वाच्य ईश्वर को (स्मर) स्मरण कर, (क्लिबे) अपने सामर्थय के लिए परमात्मा और अपने स्वरूप का (स्मर) स्मरण कर, (कृतम्) अपने किये का (स्मर) स्मरण कर।
ओ३म् ओं खम्ब्रह्म॥ यजुर्वेद ४०.१७
पदार्थः जिसका नाम ओ३म् है वह आकाशवत महान् सर्वव्यापक है। ओ३म् का मुख्य अर्थ अवतीत्योम् से यह लिया जाता है कि ईश्वर रक्षा करने वाला है। ईश्वर का रक्षा करने के गुण का प्रकाश ओ३म् नाम से होता है।
ओ३म् ऋ॒चः। अ॒क्षरे॑। प॒रमे। विऽओ॑मन्। यस्मि॑न्। दे॒वाः। अधि॑। विश्वे॑। नि॒ऽसे॒दुः॥ ऋग्वेद १.१६४.३९
पदार्थः (यस्मिन्) जिस (ऋचः) वेदमन्त्र से प्रति पादित (अक्षरे) ओ३म् में (परमे) उत्तम (व्योमन्) आकाश के बीच व्यापक परमेश्वर में (विश्वे) समस्त (देवाः) जड़ व चैतन्य देव (अधि, निषेदुः) आधेय रूप से स्थित होते हैं।
ओ३म् ओमा॑सः । च॒र्ष॒णि॒ऽधृ॒तः । विश्वे॑ । दे॒वा॒सः॒ । आ । ग॒त । दा॒श्वांसः॑ । दा॒शुषः॑ । सु॒तम् ॥ ऋग्वेद १.३.७
पदार्थः (ओमासः) ओ३म् जो अपने गुणों से संसार के जीवों की रक्षा करने, ज्ञान से परिपूर्ण, विद्या और उपदेश में प्रीति रखने, विज्ञान से तृप्त, यथार्थ निश्चययुक्त, शुभगुणों को देने और सब विद्याओं को सुनाने, परमेश्वर के जानने के लिये पुरुषार्थी, श्रेष्ठ विद्या

के गुणों की इच्छा से दुष्ट गुणों के नाश करने, अत्यन्त ज्ञानवान् (चर्षणीधृतः) सत्य उपदेश से मनुष्यों के सुख के धारण करने और कराने (दाश्वांसः) अपने शुभ गुणों से सबको निर्भय करने हारे (विश्वे देवासः) विश्व देवाः हैं, वे (दाशुषः) सज्जन मनुष्यों के सामने (सुतम्) सोम आदि पदार्थ और विज्ञान का प्रकाश (आ गत) नित्य करते रहें॥

हे परमपिता परमात्मा! आप हमको अनन्त सुख देओ, जो कुछ मांगेंगे सो आप से ही हम लोग मांगेंगे, सब सुखों का देने वाला आपके बिना कोई नहीं है, सर्वथा हम लोगों को आपका ही आश्रय है। अन्य किसी का नहीं। क्योंकि सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी दयामय सबसे बड़े पिता को छोड़ के अन्य का आश्रय हम लोग कभी न करेंगे, आपका तो स्वभाव ही है कि अङ्गीकृत को कभी नहीं छोड़ते सो आप सदैव हमको सुख देंगे, यह हम लोगों को दृढ़ निश्चय है। हे प्रभु! आप ही हमे तीनों आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक दुखों से छुड़ाने वाले हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती